

1358/11
PBR/11

समक्ष राजस्व मण्डल ग्वालियर, भोपाल (म.प्र.)

पुनरीक्षण याचिका क्रमांक 1358/PBR/11

द्व

① श्रीमती ऊषा यादव एवं ~~अन्य~~ पत्नी पुनरीक्षणकर्ता/आवेदकगण

श्री रामेश्वर सिंह यादव निवासी - अनाम - जौहरा खुर्द
राहसील व जिला - भुरैना (म.प्र.) विरुद्ध

② श्री मावई व/० श्री पंजाब सिंह यादव
निवासी - लयनगर चारवटी भुरैना (म.प्र.)

① सीताराम एवं ~~अन्य~~ 5/० श्री रुग्णाली उलास अनावेदकगण

② छगनलाल 5/० श्री रुग्णाली उलास दोनों निवासी - अनाम - रासबाकौड़ी

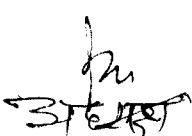
राहसील - कुपूर
जिला - भोपाल

आवेदन पत्र अंतर्गत आदेश-35(3) सहपठित धारा-32

म प भ-राजस्व संहिता-1959

उष्ण | सीतागढ

सं. 3795-80R/13 मोक्ष

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
<p>13.8.2014</p>	<p>उभय पक्ष के विद्वान अभिभाषकों द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया। यद्यपि आवेदन के अभिभाषक द्वारा आवेदन पत्र के साथ शपथपत्र प्रस्तुत नहीं किया है, परन्तु चूंकि आवेदकगण के अभिभाषक पेशी दिनांक 25.9.2013 को विद्वान से उपाधित हो गये थे, इसलिए प्रकृत पुनर्स्थापित किये जाने का औचित्य बनता है। आवेदकगण के विद्वान अभिभाषक का तर्क उचित नहीं है कि प्रकृत अदालत पेशी में निरस्त होने पर आगे आवेदकगण पुनर्स्थापन आवेदन पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं, अथवा आधिवक्ता को का पुनर्स्थापन आवेदन पत्र प्रस्तुत करने के विषये आधीकृत करने हेतु नये। सिरे से अभिभाषक पत्र देना चाहिये। वर्तमान प्रकृत में अभिभाषक पत्र प्रस्तुत नहीं होने से भी पुनर्स्थापन आवेदन पत्र निरस्त किये जाने योग्य है, क्योंकि पक्षकार द्वारा अभिभाषक नियुक्त कर दिये जाने के पश्चात् अभिभाषक की त्रुटि के कारण पक्षकार दण्डित किया जाना उचित नहीं है।</p> <p>2/ उपरोक्त विश्लेषण के परिणाम में मूल प्रकृत पुनर्स्थापित किया जाता है। इस प्रकृत में कोई कार्यवाही शेष नहीं होने से समाप्त किया जाता है।</p> <p style="text-align: right;">  अधिवक्ता </p>	